

किरन कालिंदी
राँची, झारखंड

कोरा कागज

चलो कोरे कागज को स्याह करते हैं।
उससे मन की कुछ बात कहते हैं।

मन में है कई यादें पुरानी,
कुछ खट्टी, कुछ मीठी,
कुछ बचपन की कहानी।
मन बड़ा बेसब्र है,
किसी से बात कहने को।
मगर पास नहीं कोई साथी पुरानी।

साथ रहता है मेरे,
यही कोरा कागज।
इसी कोरे कागज को है,
सब बातें सुनानी।
ये सुनता गया सब ...,
मैं कहती गई ...,
मन की सारी कहानी।
न टोका, न टोकी, नहीं कोई उबासी।

कहां से है इतना सब्र इसने पाया।
हर किसी का साथ यूं ही निभाया।

बहुत अद्भुत है कोरे कागज की कहानी।
यही है अकेला सबके लिए बाहें फैलाए।
हर किसी की अभिव्यक्ति को अपने मन में बसाए।

मनमोहक रात

है निःशब्द खामोशी ...
स्याह काली रात है।

आसमां पर चांद के संग,
सितारों का साम्राज्य है।
वसुंधरा पर फैली हुई,
मखमली हरियाली है।

उस पर चमचमाते,
जुगनुओं का संसार है।

झींगुरों की मद्धिम स्वरलहरी से,
वादियां गुंजित हुई।
रंग बिरंगे कीट-पतंगों का,
रत्न जड़ित दृश्य सा विस्तार है।

बारिशों के बूंद ने इसे,
और भी मनोरम किया।
मन को जो सुकून से भर दे,
ऐसा दृश्य उभर रहा।

कौन कहता है कि कालिमा मनमोहक नहीं।
कितनी मनमोहक ये अंधेरी रात है।
आखिरी पहर में ये और भी मादक हुई।
कितना असीम खुबसूरत,
ये रात्रि का संसार है।